स्वामी रामानंद तीर्थ
मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ

'ज्ञानतीर्थ', विष्णुपूरी, नांदेड. 431 606.

991

पदवी व पदव्युत्तर अभ्यासक्रमांसाठी (U.G./P.G.)

प्रकल्प[illegible] प्रबंधिका
(Project Work Book)

आदर्श एज्युकेशन सोसायटीचे M.A. HINDI EY

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय

हिंगोली जि. हिंगोली–४३१५१३ HB. 132438

नॅक B दर्जा प्राप्त

आदर्श महाविद्यालय विद्यार्थी व कर्मचारी सहकारी ग्राहक भांडार म. हिंगोली

ता.जि. हिंगोली ४३१५१३

रजि.नं. PBL/HLI/CON/733/1991 स्थापना वर्ष : १९९१

।। एकमेका सहाय्य करू – अवघे धरू सुपंथ ।।

Sr. College Project/2000/July2019/Code 7/S-20/

स्वामी रामानंद तीर्थ
मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ

'ज्ञानतीर्थ', विष्णुपूरी, नांदेड. 431 606.

प्रकल्पलेखन प्रबंधीका
(Project Work Book)

महाविद्यालयाचे नांव : आदर्श महाविद्यालय हिंगोली

वर्ष : 2022 ते 2023

विद्यार्थ्याचे नांव : शिवराणी गिरजाअप्पा पाटील

वर्ग : MA(SY) एम.ए. हिंदी (द्वितीय वर्ष)

बैठक क्रमांक : HB 132438

प्रकल्प कार्याचे शीर्षक : "लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'मिस्टर अभिमन्यु' में व्यक्ति संघर्ष"

मार्गदर्शक प्राध्यापकाचे नांव : प्रो. डॉ. एस. व्ही. नरवाडे

प्रमाणपत्र

प्रमाणित करतो की, मी शिवरानी गिरजाअप्पा पाटील

एम.ए. हिंदी (द्वितीयवर्ष) वर्ग MA (SY) विषय (हिंदी) "लक्ष्मीनारायण लाल कृत नाटक 'मिस्टर अभिमन्यु' में व्यक्त संघर्ष" या विषयावर मार्गदर्शक प्राध्यापकाच्या व विद्यापीठ नियमावलीतील

सूचनेप्रमाणे सदर प्रबंधिका तयार केली आहे. या विषयाकरीता गोळा केलेल्या लेखन सामग्रीवरच ही प्रबंधिका आधारित असून स्वतःच्या हस्ताक्षरात लिहिली आहे. या विषयावर या महाविद्यालयात इतर कोणत्याही विद्यार्थ्याने प्रबंधिका लिहिली नाही.

विद्यार्थी
नाव व स्वाक्षरी
शिवरानी गिरजाअप्पा पाटील
Shivrani

मार्गदर्शक
प्राध्यापकाचे नाव व स्वाक्षरी
प्रो.(डॉ) एस.व्ही. नरवाडे

दिनांक : 27/04/२०

प्रमाणपत्र

प्रमाणित करतो की,

श्री/श्रीमती/कु. शिवराणी गिरजाअप्पा पाटील, एम.ए.हिंदी (द्वितीय वर्ष)

यांनी लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'मिस्टर अभिमन्यु' में व्यक्त संघर्ष या विषयावर मार्गदर्शक प्राध्यापकाच्या मार्गदर्शनाखाली विद्यापीठाच्या प्रकल्पलेखन नियमांप्रमाणे प्रकल्पकार्य प्रबंधिका तयार केली आहे. सदर प्रकल्पकार्य प्रबंधिका ही संबंधीत विद्यार्थ्याने स्वतः संकलित केलेल्या लेखन सामाग्रीवर आधारीत असून स्वतःच्या हस्ताक्षरात लिहीली आहे. या महाविद्यालयात या विषयावर इतर कोणत्याही विद्यार्थ्यास / विद्यार्थीनीस लिहिण्याची परवानगी दिली नसून या विषयावरची ही एकमेव प्रबंधिका आहे.

मार्गदर्शक
प्राध्यापकाचे नाव व स्वाक्षरी
प्रो.(डॉ.) एस. व्ही. नरवाडे

प्राचार्य
सही व शिक्का
प्रभारी प्राचार्य
आदर्श शिक्षण संस्थेचे,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
हिंगोली जि. हिंगोली

दिनांक : 27/04/2023

"श्री. लक्ष्मीनारायण लाल कृत नाटक "मिस्टर अभिमन्यु" में व्यक्त संघर्ष"

भूमिका

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ नांदेड के अंतर्गत एम. ए द्वितीय वर्ष के लिए प्रकल्प लेखन का कार्य दिया गया है। । यह पुरा प्रकल्प कार्य लेखन सौ अंको के लिए विद्यापीठ की और से छात्रों को अनिवार्य कर दिया गया है।

इस प्रकल्प लेखन कार्य मैं नाटक, एकांकी, उपन्यास कहानी, कविता आदी विधाओं में मैंने नाटक इस विधा पर डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित 'मिस्टर अभिमन्यु' इस नाटक पर प्रकल्प लेखन कार्य संपन्न किया है।

इस प्रकल्प लेखन के अध्ययन के अनुरूप इस में नाटक विधा का परिचय, लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तीत्व एवं कृतित्व, 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक की कथावस्तु, नाटक में व्यक्त संघर्ष यह चार अध्याय महत्व पूर्ण है।

इस नाटक का अध्ययन से स्पष्ट होता है की इस नाटक मुल - संवेदना जो आज के मानव जीवन की त्रासदी और विडंबना को दर्शाती है। इस प्रकार इस प्रकल्प के अध्ययन से इस में निहित, समस्या प्रधान प्रश्न, हमारे जीवन में भी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप में दिखाइ देते है।

Shivrani

शिवराणी गिरजाआप्पा पाटील
एम. ए हिंन्दी द्वितीय वर्ष
शै. वर्ष. 2022-2023

कृतज्ञता ज्ञापन

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ नांदेड के अंतर्गत एम.ए द्वितीय ~~वर्ष~~ वर्ष के लिए प्रकल्प लेखण का कार्य दिया गया है। इस प्रकल्प लेखण के गुणों का विभाजण, पच्चहत्तर अंको में किया गया है और पच्चीस अंक अंतर्गत मुल्यमापण के लिए दिए है। यह पुरा प्रकल्प लेखण सौ अंको के लिए है।

प्रस्तुत प्रकल्प लेखण के लिए मुझे नाटक इस विधा पर प्रकल्प लेखण का कार्य दिया है। इस नाटक विधा लक्ष्मीनारायण लाल द्वारा रचित 'मिस्टर अभिमन्यु' इस नाटक पर प्रकल्प लेखन किया है। प्रकल्प लेखण कार्य में मुझे प्रो. (डॉ) एस. डी. नरवाडे सर हिंदी विभाग के प्रा. टि. डी. आडे सर का भी समय- समय पर मार्गदर्शण मिलता रहा। इनके अतिरिक्त ग्रंथालय के श्री. जे आर शंकपाळे मॅडम. श्री एस. एच चौधरी सर की भी काफी मदद मिली है। इनके अतिरिक्त श्री. एस ओ. निजलेवार श्री. जी.टी गुंजकर . श्री. ए. आर परदेशी और श्री. बी.डी. ढोबरे इन सभी कर्मचारीयोने सहायता की।

अत: इस प्रकल्प - लेखण को पुर्ण होने में जिनकी सहायता एवं मार्गदर्शण मिलाहै उनके प्रती मैं हृदय से धन्यवाद करती हुं।

Shivrani

शिवराणी गिरजाआप्पा पाटील
एम. ए हिन्दी द्वितीय वर्ष
शै वर्ष. 2022-2023

एम. ए हिंदी (द्वितीय वर्ष) हेतु
प्रकल्प- लेखन

"श्री लक्ष्मीनारायण लाल कृत नाटक 'मिस्टर अभिमन्यु' में व्यक्त संघर्ष"

प्रकल्प प्रस्तुत कर्ता

शिवरानी गिरजाआप्पा पाटिल

मार्गदर्शक
प्रो. (डॉ) संजीवकुमार नरवाडे
विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग प्रमुख
आदर्श महाविद्यालय,
हिंगोली.

अनुक्रम

अ.क्र.	विवरण	पृष्ठांक
1.	भुमिका	पृष्ठ क्र. 1
2.	कृतज्ञता ज्ञापन	पृष्ठ क्र. 2
3.	प्रथम अध्याय : हिंदी नाटक : ऐतिहासीक परिप्रेक्ष्य	पृष्ठ क्र. 4 से 8
4.	द्वितीय अध्याय : लक्ष्मीनारायण लाल : जीवन एवं कृतित्व	पृष्ठ क्र. 9 से 17
5.	तृतीय अध्याय : 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक की कथावस्तु	पृष्ठ क्र. 17 से 40
6.	चतुर्थ अध्याय : मिस्टर अभिमन्यु नाटक में व्यक्त संघर्ष	पृष्ठ क्र. 41 से 47
7.	उपसंहार	पृष्ठ क्र. 47 से 50
8.	संदर्भ ग्रंथ सुची.	पृष्ठ क्र. 51

प्रथम अध्याय
हिंदी नाटक : ऐतिहासीक परिप्रेक्ष्य

नाटक की उत्पती में चार मनोवृत्तियां प्रचलीत है 1) अनुकरण की प्रवृत्ती (2) पारस्पारीक परिचय के द्वारा आत्मविस्तार की प्रवृत्ती (3) जाती अथवा समुदाय की रक्षा की प्रवृत्ती (4) आत्मविश्वकी की प्रवृत्ती. इन चारों प्रवृत्तिया स्वभावत: मानव हृदय में विद्यामान होती है। मानव जन्म के तुरंतबाद जो शरीर अंगोद्वारा चेष्टाये करता है। वही चेष्टायें नाटक की रुपरेखा प्रदर्शीत करती है।

हिंदी नाटक लिखने की परंपरा की शुरवात बाबु हरिशचंद्र ने की थी. क्योंकी इनसे पुर्वे नाटक नाम से जो रचनाए हिन्दी में उपलब्ध है, उनमें नाटक के तत्वों का अभाव है। प्राणचन्द्र चौहान कृत 'रामायण महानाटक' 1610 ई. तथा कवी उदय कृत 'हनुमान नाटक' 1840 ई. में लिखा गया। आधुनिक काल में भारतेंदु जी के पिता गोपालचंद्र गिरधर दास नें 'नहुष' 1857 ई. गणेश कवी ने 'प्रद्युम्न विजय' 1863 ई. तथा शीतला प्रसाद त्रिपाठी ने 'जानकी मंगल' 1868 ई. नाटकों की रचना की है. परंतु इनमें से अंतिम रचना ही नाट्यगुणों से संपन है।
हिंदी नाटकों के विकास की परम्परा तीन युगों में विभाजीत है वह इस प्रकार

1) भारतेन्दु युग :-

यह नाटक का प्रारंभिक युग है। इस युग मैं मौलिक और अनुदीत दोनो प्रकार के नाटक लिखे गये है। आनुदीत नाटको ने हिंन्दी नाट्य साहीत्य को नवीन दृष्टी दृष्टि प्रदान की है। स्वंय भारतेंन्दु ने आनुदीत नाटक और मौलीक नाटकों की रचना की है। भारतेंन्दु जी के अनुदीत नाटक इस प्रकार - विद्यासुंदर रत्नावली, धनजय विजय, कर्पुर मंजरी पांखण्ड, विडम्बन मुद्राराक्षस, दुर्लभ बंधु इनके आलावा भारतेन्दुजी के मौलीक नाटक इसप्रकार - भारत जननी, वेदीकी हिंसा न भवती सत्य हरिश्चंद, श्री चंद्रावली नाटीका, विषस्य, विषमोषधम भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंन्धेर नगरी सती प्रताप, प्रेम जोगीनी।

भारतेन्दु काल के अन्य नाटककारों में प्रमुख है - लाला श्री निवासदास, राधाकृष्ण दास, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी गोपालराम गहमरी, किशोरीलाल, गोस्वामी, प्रताप नारायण मिश्र एवं जी. पी श्रीवास्तव आदी।

लाला श्रीनिवासदास ने - श्री प्रल्हाद चरित्र तथा, संवरण, रणधीर प्रेम मोहीनी और संयोगिता स्वंयवर नाटक लिखे है। राधाकृष्ण दास ने - महारावी पद्मावती, धमलिप, महाराणा प्रताप तथा दुःखनी बाला आदी नाटक लिखे। बालकृष्ण भट ने स्वंयवर वृहन्नलो, कलीराज की सभा शिक्षादान बालविवाह आदी नाटक लिखे है।

संक्षेपं में भारतेंदु युग मैं मौलीक एवं ऐतिहासीक सामाजिक आदी प्रकार के नाटक लिखे गये है।

द्वितीय अध्याय
लक्ष्मीनारायण लाल : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तावना:

I) लक्ष्मीनारायण लाल जीवन परिचय :-

हिंदी नाट्य साहित्य में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का स्थान महत्वपूर्ण है। लाल जी ने स्वतंत्र्यता के बाद हिन्दी साहीत्य में नाटक एवं रंगमंच को नयी दिशा प्रदान की है। भारतेंदु और प्रसाद के बाद इन्होंने हिंदी नाट्य साहीत्य और उसकी परंपरा और रंगमंच को संभाला है। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के जीवनक्रम इस प्रकार :-

1) जन्म :-

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का जन्म 4 मार्च 1927 को जिला बस्ती के जलालपुर गाँव में हुआ।

2) पारिवारीक जीवन :-

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के पिता का नाम श्री शिवसेवक लाल तथा माता का नाम मुंगादेवी था। डॉ. लक्ष्मीनारायन लाल को दो भाई और दो बहने थी। उनके बडे भाई का नाम बलदेव लाल तथा छोटे भाई का नाम कमला लाल था।। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल अपने माता-पिता के मंझले पुत्र थे उन्हें ये दो बहने. श्यामा और सावित्री थी।

3) विवाह :- डॉ लाल का विवाह 16 वर्ष के आयु क में

पत्र - पत्रिकाओं में अपनी कहानियाँ प्रकाशित करवाते रहें। 1960 में उनका पहला कहानी संग्रह 'सुने आँगन रस बरसे' के नाम से प्रकाशित हुआ। उनका दुसरा महत्वपूर्ण कहानीसंग्रह 'एक बूंद जल' एवं 'एक और कहानी' प्रकाशीत हुए। 1973 में प्रकाशित हुआ उनका पाँचवा कहानीसंग्रह 'डाक आए थे' क्रम की अगली कडी जरूर है लेकीन उनकी कहानी काल का नया मोड कदापी नही उनके इन पाँचो कहानी संग्रहों में उनकी मौलीक कहानियाँ है।

3) जीवनीकार / लक्ष्मीनारायण लाल :-

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल को एक अन्य पहलु जीवणीलेखण है। उन्होंने स्वंय को राजनीती से दुर रखा परंतु जयप्रकाश और घनश्यामदास बिडला की जीवणी लिखकर अपने राजनीतिक विचार प्रकट किए। ये पुस्तके उपन्यास की तरह है।

इसमें चरित्र अत्यंत स्पष्ट रूप में उभरे है। लाल ने दो चरित्रों पर तीन पुस्तके लिखी - 'जयप्रकाश' अंधकार में एक प्रकाश। जयप्रकाश तथा स्वराज्य और घनश्यामदास।

4) एकांकीकार / लक्ष्मीनारायण लाल :-

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के साहीत्य में हमारे सामाजिक जीवण के विविध पक्षों का चित्रण अपनी संपूर्ण शक्ती के साथ किया है। लाल के कुल मिलाकर छह एकांकी संग्रह प्रकाशित हुए।

जिनमें 'ताजमहाल' के आँसु' 'पर्वत के पीछे' 'नाटक बहुरंगी' 'दुसरा दरवाजा' खेल नहीं नाटक नया तमाशा आदी सभी एकांकी नाटको में यथार्थ जीवण के प्रश्नो से जुझने की

तृतीय अध्याये
'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक की कथावस्तु

'मिस्टर अभिमन्यु' यह लक्ष्मीनारायण लाल जी का प्रसिद्ध नाटक है। इस नाटक मैं कुल सात चरित्र है। राजन इस नाटक का मुख्य पात्र एवं नायक है। जिसे लक्ष्मीनारायण लाल ने 'मिस्टर अभिमन्यु' कह कर उसके जीवण की विडम्बना को उजागर किया है। नाटक के नायक राजन कलेक्टर पद पर कार्येरत है। उसका चरित्र आदर्शवादी और इमानदार है। राजन को अपने चरित्र पर बेइमानी का धबा नही चाहीए इसीलीए वह संघर्ष करता दिखाइ देता है, पर इस संघर्ष में वह एकेला पड जाता है, घरपरिवार के लोग भी उसके साथ नही हैं। इस तरह वह बाह्य और आन्तरीक व्युहों में जकड जाता है और आपनी आत्मओमा को मारा कर जीता है। यही इस नाटक के नायक की अभिशप्त नियती बन जाती है। यह नाटक आधुनिक समस्या और मनुष्य की आज के समाज में की परिस्थिती को उजागर करती है। इस नाटक की कथावस्तु इस प्रकार है।

'मिस्टर अभिमन्यु' यह लक्ष्मीनारायण लाल जी का नाटक है। इस नाटक में कुलमिलाकर छह सात सदस्य है। इस नाटक का नायक राजन है जो कलेक्टर है। आत्मन और रायादत्त यह राजनेते है, विमल राजन की पत्नी और वकील राजन के पिताजी है. । इस नाटक में दो अंक है। पहीले अंक मैं दो दृश्य है। इस नाटक का। प्रारंभ में जो दृश्य दिखाइ देता है वह कलेक्टर के बंगले का बाहरी कमरा है इस नाटक में थकत कथा इसप्रकार है।

इस नाटक की शुरुवात राजन के बंगले के बाहरी कमरें में जो राजन का ऑफीस है वहाँ से होती है। राजण वही अपने ऑफीसमें कुछ ढूँढ रहे है। सहसा उसकी पत्नी आती है दोनों में बातचीत शुरु है। राजन के पिता बाहर से आकर विमल से कहते है।
" बैठो क्या बयान करु, वकालत खाने से घर पहुँचा ही था, की केजरीवाल मिल का मॅनेजर गाडी लिये हुँए दरवाजे पर हाजिर अपने जो रिपोर्ट दी, मैं घबरा गया। कहा मैं खुशी - या मना रहा था मेरा रत्न कलेक्टर से कमिश्नर हो गया। मैंने वहा लोगो को दावते दी .... और एकाएक कल यह खबर की यह नौकरी से इस्तीफा दे रहे है। मेरे पैर के नीचे से जैसे जमीन खिसक गयी -- बहु, बात क्या है"

इस संदर्भ से यह पता चलता है की राजन जो कलेक्टर है वह अपने पद से त्यागपत्र दे रहा है और उसके पिताजी यह बात सुनकर रागवेते है, विमल राजन की पत्नी और वकील राजन के पिताजी है। इस नाटक में दो अंक है। पहीले अंक में दो दृश्य है। इस नाटक प्रारंभ में जो दृश्य दिखाई देता है वह कलेक्टर के बंगले का बाहरी कमरा है इस नाटक मैं व्यक्त कथा इसप्रकार है।

इस नाटक की शुरुवात राजन के बंगले के बाहरी कमरें में जो राजन का ऑफीस है वहाँ से हुई है। राजन वही अपनें ऑफीस में कुछ ढूँढ रही है। सहसा उसकी पत्नी आती है। दोनो मैं बातचीत शुरु है। राजन के पिता बाहर से आकर विमल से कहतें है। "बैठो क्या बयान करु वकालत खाने से घर पहुँचा ही था, की केजरीवाल मिल का मॅनेजर गाडी लिये हुँए दरवाजे पर हाजिर उसने जो रिपोर्ट दी, मै घबरा गया।

चतुर्थ अध्याय

'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक में व्यक्त संघर्ष

'मिस्टर अभिमन्यु' यह नाटक लक्ष्मीनारायण लाल जी का नाटक है। इस नाटक में समकालीन जीवन की समस्या और भ्रष्ट शासन व्यवस्था की समस्या है। 'मिस्टर अभिमन्यु' यह समकालीन युग का नाटक है।

'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक का नायक राजन है। इस नाटक में व्यक्त संघर्ष राजन का गयादत्त, केजरीवाल और भ्रष्ट शासन व्यवस्था से है। राजन एक इमानदार अधिकारी है। राजन कलेक्टर है। इस नाटक में भ्रष्ट व्यवस्था को दिखाया गया है। जिसे राजन व्यवस्था के खिलाफ लडता है और खुद इस व्यवस्था के चक्रव्युह में फंस जाता है। 'मिस्टर अभिमन्यु' इस नाटक का शिर्षक को देख कर हमें महाभारत कालीन अभिमन्यु का स्मरण होता है। महाभारत कालीन अभिमन्यु और आधुनिक युगीन अभिमन्यु में जो फर्क है। नाटक की भुमिका में उसकी ओर संकेत करते हुए श्रीकांत वर्मा ने लिखा है कि "महाभारत के अभिमन्यु और डॉ. लक्ष्मीनारायन लाल के अभिमन्यु में जिसे 'मिस्टर अभिमन्यु' कहकर उन्होंने विडंबना को उजागर कर दिया है एक बुनियादी फर्क है। अभिमन्यु सचमुच ही बाहर निकलना चाहता था, जिसके लिए उसने सच्ची लढाई लडी थी और वह मारा गया था, लेकिन मिस्टर अभिमन्यु बाहर निकलना नहीं चाहता... उसे केवल भ्रांती को बनाये रखने के लिए वह एक लडाई भी लडता है, जो झुठी नहीं सच्ची लडाई है.. अन्तर केवल इतना है कि वह एक ~~लडाई भी~~ अनिर्णय में पडे व्यक्ति की लडाई है उस व्य. अभिमन्यु जो निर्णय ले चुका है।

राजनेताओ से उस संघर्ष में उसके परिवार का उसका साथ नही देते इसीलीए राजन अपने आप को एकेला महसुस करता है। इस प्रकार राजन का संघर्ष गयाप्रत केजरीवाल, विमल पिताजी और भ्रष्ट शासन व्यवस्था से दिखाई देता है.

राजन इस संघर्ष में पुर्ण रूप से हार कर टूट जाता है। इस तरह जीना उसकी अभिशप्त नियती बन जाती है।

संदर्भ सूची

1) लाल लक्ष्मीनारायण, मिस्टर अभिमन्यु, नेशनल पब्लीकेशनहाउस दिल्ली, मयुर संस्करण पृष्ठ क्र ---2

2) वही पृ. क्र 6

3) वही पृ. क्र 44

4) वही पृ. क्र 74

5) वही पृ. क्र 75

6) वही पृ. क्र 76

उपसंहार

'उपसंहार' में प्रस्तुत प्रकल्प-लेखन कार्य में प्राप्त अनुमान एवं निष्कर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रकल्प के प्रथम अध्याय में हमे हिंदी नाटक उत्पती और उसके विकास के बारे में ज्ञात होता है। नाटक की उत्पती के बारे में चार मनोवृत्तियाँ प्रचलीत है। उसमें अनुकरण की प्रवृत्ती, आत्मविस्तार की प्रवृत्ती, समुदाय और की रक्षा की प्रवृत्ती और अभिव्यक्ती की प्रवृत्ती। यह चारों प्रवृत्तिया मानव मन में विद्यमान है। हिन्दी का पहला नाटक प्राणचंद्र चौहान कृत 'रामायण महानाटक' 1610 ई में लिखा गया है। शितला प्रसाद त्रिपाठी ने 'जानक मंगल' 1863 ई में नाटक की रचना की।

इनमें अंतिम रचना नाट्य गुणों से संपादित है। यही से हिंदी नाटकों का प्रारंभ माना जाना चाहीए। पहीले अध्याय में हमें नाटक विधा की उत्पती और उसका विकासक्रम का परिचय प्रस्तुंत करत है।
प्रस्तुत प्रकल्प का प्रथम अध्याय" हिंदी नाटक: ऐतिहासीक परिप्रेक्ष्य है. जिसमें हिंदी नाटक के उद्भव एवं विकास पर दृष्टीक्षेप डाला गया है। इसके हिंदी नाटक के क्रमिक-विकास को स्पष्ट किया गया है।

प्रस्तुंत प्रकल्प का द्वितिय अध्याय डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल: के जीवीत व्यक्तित्व एवं कृतित्वत को देखा गया है हिंदी नाटक और रंगमंच को दिशा देनेवाले नाटककार के रूप में हमें डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का योगदान महत्वपूर्ण है।

से है। राजन एक आदर्शवादी और इमानदार कलेक्टर है। पर नवनिर्वाचित नेता गयादत्त उसे इमानदार नहीं रहने देते। राजन को व्युह में फंसाने के लिए वह एक चक्रव्युह निर्माण करते है।
उसमें राजन को फंसाते है।

राजन राजनेता गयादत्त और केजरीवाल से संघर्ष में राजन एकेला पड जाता है। एकेले पन में उनके कल्पना में आत्मन और गयादत्त उभरते है पर उनके अन्तर मन में भी गयादत्त आत्मन को पराजय कर स्वंय विजयी हो जाता है। इसप्रकार इस अध्याय मैं राजन की मानसिक त्रासदी उसकी विडंम्बना को और उसके संघर्ष को हम प्रकल्प के अध्याय में प्रस्तुत करतें है।

निष्कर्षतो इस नाटक के अध्ययन से कह सकते है की इस नाटक में मनुष्य की विडंम्बन उसकी त्रासदी, अनिर्णय की स्थिती, मानसिक द्वंद्व आदि के बारे में हमें ज्ञात होता है। आज के मनुष्य के सामने आनेवाली समस्या इसीप्रकार की है और इस व्युहों में फसता चला जा रहा है।
इसके दर्शन हमें डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'मिस्टर अभिमन्यु' में देखने को मिलता है।

• संदर्भ ग्रंथ सुची •

1) भुमिका पृष्ठ क्र - 1

2) प्रथम अध्याय : हिंदी नाटक - पृष्ठ क्र. 4

3) द्वितीय अध्याय : लक्ष्मीनारायण लाल :- पृष्ठ क्र. 9

3) तृतीय अध्याय : मिस्टर अभिमन्यु :- पृष्ठ क्र. 17

4) चतुर्थ अध्याय : मिस्टर अभिमन्यु : पृष्ठ क्र. 35

5) उपसंहार :- पृष्ठ क्र. 41